मिर्च की फसल के प्रमुख रोग एवं कीट

कृषि कुंभ (अक्टूबर, 2023),
खण्ड 03 भाग 05, पृष्ठ संख्या 32–34

मिर्च की फसल के प्रमुख रोग एवं कीट तथा उनका समेकित प्रबंधन

डॉ0 दुर्गा प्रसाद[1] एवं डॉ0 आर0पी0 सिंह[2]

[1]सह–प्राध्यापक, पादप रोग विज्ञान,
कृषि महाविद्यालय, बायतु, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर
[2]वरीय वैज्ञानिक एवं प्रधान, कृषि विज्ञान केंद्र,
नरकटियागंज, पश्चिम चम्पारण, बिहार, भारत।

Email Id: rpspath870@gmail.com

मिर्च (कैप्सिकम एनम, कुल–सोलेनेसी) एक गर्म मौसम का मसाला है जिसके आभाव में कोई सब्जी कितनी ही मेहनत से तैयार किया गयी हो, फीकी होती है। इसका उपयोग ताजे, सूखे एवं पाउडर–तीनों रूप में किया जाता है। इसमें विटामिन ए व सी पाया जाता है। यह मुख्य रूप से तीन तरह का होता है– मसालों वाली साधारण, आचार वाली व शिमला मिर्च। इसकी कुछ प्रजातियाँ काफी तीखी व कुछ कम अथवा नहीं के बराबर होती है। नमी और मैदानी इलाकों व क्षेत्रों में जलवायु अनुकूल होने के मिर्च की फसल को बीमारियों और कीटों से प्रति वर्ष नुकसान भयानक रूप में होता है। रोगों एवं कीटों के प्रकोप से मिर्च की फसल की गुणवत्ता प्रभावित होती है तथा बाजार मूल्य कम मिलता है और उत्पादन घट जाता है। मिर्च की फसल में लगने वाले प्रमुख रोग एवं कीटों का समेकित प्रबंधन अधोलिखित अनुसार करना चाहिए।

(क) मिर्च की फसल के प्रमुख रोग तथा उनका समेकित प्रबंधन

1. आर्द्र गलन रोगः यह पौधशाला की प्रमुख बीमारी है जो फफूँद के द्वारा होता है। जमीन की सतह से प्रभावित पौधा गलकर नीचे गिर जाता है।

समेकित प्रबन्धनः

- प्रतिवर्ष नर्सरी के स्थान को बदलते रहना चाहिए।
- पौधशाला की क्यारी भूमि की सतह से थोड़ी ऊपर उठी हुयी एवं मृदा हल्की बलुई होनी चाहिए।
- बीज को घना नहीं बोना चाहिए।
- सिचाई हल्की एवं आवश्यकतानुसार करनी चाहिए।
- बुआई से पूर्व कार्बेन्डाजिम की 2 ग्राम प्रति किग्रा. बीज दर से या ट्राईकोडरमा 5–10 ग्राम प्रति किग्रा. बीज दर से शोधन करना चाहिए।
- खड़ी फसल में रोग के लक्षण दिखाई देने पर मैंकोजेब की 2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिडकाव करना चाहिए।

2. शीर्षारम्भी (डाइबैक)/फल सडन रोगः मिर्च का यह अति व्यापक रोग है। यह रोग फफूँद के द्वारा होता है। इस रोग से प्रभावित पौधों की टहनियाँ ऊपर से नीचे की तरफ सूखती जाती हैं, फल सड़ने लगता है, पौधे बौने रह जाते हैं।

समेकित प्रबन्धनः

- कार्बेन्डाजिम या थिरम 75 प्रतिशत डब्ल्यू० पी० + कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यू० पी० (2:1) ग्राम प्रति

किग्रा. बीज दर शोधन करके बुआई करना चाहिए।

- खेत को खरपतवारों से मुक्त रखना चाहिए। रोग ग्रसित टहनियों तथा प्रभावित फल को एकत्र कर नष्ट कर देना चाहिए।
- खड़ी फसल पर रोग के लक्षण दिखाई देने पर डाईफोलाटान 3 ग्राम प्रति लीटर पानी या बेनलेट 1–1.5 ग्राम प्रति लीटर पानी या क्लोरोथैलोनिल 2 ग्राम प्रति लीटर पानी या विटरटेनाल 1–2 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से 2–3 छिडकाव करना चाहिए।

3. गुरचा/ पत्ती मरोड़क रोगः यह एक विषाणु रोग है जो सफेद मक्खी के द्वारा फैलता है। इसके प्रकोप से पत्तियां सिकुड़ने लगती हैं, पौधा छोटा रह जाता है, पुष्पपुंज अविकसित रह जाते हैं, दो गाठों के बीच की दूरी कम हो जाती है तथा झाड़ीनुमा दिखाई देता है जिससे फल नहीं लगता है।

समेकित प्रबन्धनः

- रोगी पौधों को उखाडकर नष्ट कर देना चाहिए।
- पौधशाला में बुआई करते समय मिटटी में कार्बोफ्यूरान 5 ग्राम प्रति वर्ग मी. की दर से मिलाएं।
- पौधशाला को मच्छरदानी युक्त जाली से ढकना चाहिए।
- टमाटर के खेत के चारों तरफ मक्का, ज्वार, बाजरा लगाना चाहिए।
- रोग के लक्षण दिखाई देने पर कानफिडोर 3 मिली प्रति 10 लीटर पानी की दर से छिडकाव करना चाहिए।

4. मोसैक रोगः पत्ती की मध्य शिराओं को छोडकर पर्ण हरीतिमा समाप्त हो जाती है। प्रभावित पौधों की पत्तियां अनियमित रूप से सिकुडकर पीली हो जाती हैं जिससे पौधों का विकास रूक जाता है। फूल व् फल कम लगते हैं। इस रोग का फैलाव माहूँ या थ्रिप्स कीट के द्वारा होता है।

समेकित प्रबन्धनः

- रोगग्रस्त पौधों को उखाड़ कर नष्ट कर देना चाहिए।
- बैगन की फसल के पास टमाटर, तम्बाकू, मिर्च, दलहनी फसलें तथा कद्दूवर्गीय फसलें न लगायें।
- चूँकि इस कीट का प्रसार माहूँ के द्वारा होता है इसके नियत्रण हेतु डाईमेंथोएट 30 ई0 सी0 2 मिली० प्रति ली0 पानी की दर या मेटासिस्टाक्स 1 मिली० प्रति ली0 पानी की दर से छिड़काव करना चाहिए।

5. चूर्णी फफूंदी रोगः यह वायुजनित रोग है। पत्तियों के ऊपरी सतह, निचले भाग तथा तनो पर सफेद चूर्ण जम जाता है जिससे पौधे पीले पड़कर मुरझाने लगते हैं। नम वातावरण में यह रोग तेजी से फैलता है।

समेकित प्रबन्धनः

- खेत को खरपतवारों से मुक्त रखना चाहिए।
- फसल पर रोग के लक्षण दिखाई देने पर घुलनशील सल्फर की 2–4 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से 2–3 छिड़काव 15 दिनों के अन्तराल पर करना चाहिए। अथवा ट्राईडेमेफान या ट्राईडेमेलान या विनोमाइल 1 ग्राम प्रति लीटर पानी या पेंकानजाल 1 मिली0 प्रति 4 लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिडकाव करना चाहिए।

6. उकठा रोगः मिर्च का यह रोग फफूँद के द्वारा होता है। इस रोग में पत्तियां नीचे की ओर झुक जाती हैं और पीली पड़कर सूख जाती हैं। अन्त में पूरा पौधा पीला पड़कर मर जाता है।

समेकित प्रबन्धनः

- खेत की ग्रीष्म कालीन गहरी जुताई करनी चाहिए जिससे हानिकारक फफूँद तेज धुप से नष्ट हो जाय।
- भारी मिटटी में मिर्च की रोपाई नहीं करनी चाहिए।
- भूमि शोधन ट्राईकोडरमा हारजिएनम 1 प्रतिशत डब्ल्यू० पी० 1 किग्रा. सड़ी गोबर की खाद 80–100 किग्रा.प्रति एकड़ की दर से करना चाहिए।
- कार्बेन्डाजिम या थिरम 75 प्रतिशत डब्ल्यू० पी०. कार्बेन्डाजिम 50 प्रतिशत डब्ल्यू० पी० (2:1) ग्राम प्रति किग्रा. बीज दर शोधन करके बुआई करना चाहिए।
- रोग के लक्षण दिखाई देने पर थायोफानेटमिथाइल 2–3 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से जड़ क्षेत्र में तर छिडकाव करना चाहिए।

(ख) मिर्च की फसल के प्रमुख कीट तथा उनका समेकित प्रबंधन

1. थ्रिप्सः इस कीट के शिशु व् वयस्क दोनों पत्तियों का रस चूसकर हानि पहुंचाते हैं। इसके प्रकोप से पत्तियां ऊपर की ओर मुड़कर सूख जाती हैं जिससे कारण पैदावार प्रभावित होती है। यह कीट मोजेक रोग का वाहक भी है।

समेकित प्रबन्धनः

- खेत को खरपतवारों से मुक्त रखना चाहिए।
- इमिडाक्लोप्रिड 70 प्रतिशत डब्ल्यू० एस० 2.5 ग्राम प्रति किग्रा. बीज दर से शोधन करके पौधशाला में बुआई करना चाहिए।
- वानस्पतिक कीटनाशी जैसे एन.एस.के. ई. की 4–5 प्रतिशत का घोल बनाकर 3–4 छिडकाव करना चाहिए ।अथवा अजेडीरेचटिन 0.03 प्रतिशत 2.5–5.0 ली. प्रति हे. 500–750 ली पानी में घोलकर छिडकाव करें।
- कीटनाशी रसायनों जैसे– इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस.एल. की 3 मिली प्रति 10 ली. पानी या इथोफेनप्राक्स 10 प्रति ई0 सी0 1.25 मिली प्रति ली0 पानी या बूफ्रोफेजिन 25 प्रतिशत एस0 पी0 1 मिली0 प्रति ली पानी या लैम्डासाईहैलोथ्रिन 5 प्रतिशत ई0सी0 1 मिली प्रति 2 ली0 पानी की दर से घोल बनाकर 10–12 दिनों के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए।

2. पीली माईटः यह कीट पीले रंग कीट होता है, पीठ पर सफेद धारियां पाई जाती हैं। यह कीट आसानी से दिखाई नहीं देती है ।इसका प्रकोप होने पर पत्तियां नीचे की तरफ मुड़ जाती है तथा देखने में सिकुड़ी लगती है ।इस कीट के शिशु तथा प्रौढ़ दोनों ही पत्तियों का रस चूसकर हानि पहुंचाते हैं।

समेकित प्रबन्धनः

- खेत को खरपतवारों से मुक्त रखना चाहिए।
- माईट का प्रकोप होने पर सल्फर धूल 10 प्रतिशत की 20–25 किग्रा. प्रति हे. की दर से भुरकाव करना चाहिए या घुलनशील सल्फर 2 ग्राम प्रति लीटर पानी या प्रोपारगाईट 57प्रतिशत ई० सी० 3.5 मिली. प्रति लीटर पानी की दर से छिडकाव करना चाहिए।